आवश्यक हो गया है खेती के तरीकों में बदलाव

डॉ. रामप्रताप गुप्ता

सन 1964-66 की अवधि में अल्प वर्षा के कारण भारत को भारी खाद्य संकट का सामना करना पड़ा था और इससे निपटने के लिए पी.एल.-480 के अंतर्गत अमरीका से भारी मात्रा में गेहूं का आयात करना पड़ा था। अमरीका ने गेहूं की मदद के साथ ही भारत को आने वाले वर्षों में संभावित खाद्य संकट से बचाने की आड़ में उस पर खेती के तरीकों में बदलाव भी थोपा। रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाइयों और उन्नत बीजों पर आधारित इस बदलाव को हरित क्रांति की संज्ञा दी गई थी।

हरित क्रांति वास्तव में तकनीकी निवेश, बाज़ारवाद और स्वार्थपरता का घालमेल थी। खेती के इस नए तरीके को अपनाने के लिए सिंचाई की आवश्यकता होती है, अतः सिंचित क्षेत्र में वृद्धि के लिए नदियों पर बांध बनाए गए, भूजल के दोहन के लिए नलकूप, कुंए खोदे गए। नलकूपों और कुंओं की बढ़ती संख्या के कारण भूजल स्तर दिनों दिन घटने लगा और अनेक नलकूप सूखते भी गए और उनमें निवेशित किसानों की पूंजी व्यर्थ हो गई और किसान कर्ज़ग्रस्त हो गए।

रासायनिक खेती को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ सरकार ने नगदी फसलों की खेती को भी बढ़ावा दिया। इनकी कीमतें वैश्विक कीमतों से प्रभावित होती है। एक और तो रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाइयों और उन्नत बीजों के कारण खेती की लागतों में वृद्धि तथा दूसरी ओर, नगदी फसलों की कीमतों में वैश्विक उतार-चढ़ाव के कारण खेती का ज़ोखिम बढ़ता गया है। इसके अलावा जिस वर्ष किसी कारण से उत्पादन कम हो जाता है या अंतर्राष्ट्रीय दबाव में कीमतें कम हो जाती हैं, तो किसानों के लिए भारी संकट पैदा हो जाता है और कर्ज़ चुकाना असंभव हो जाता है। इसी बढ़ती असमर्थता के कारण इन वर्षों में किसान बड़ी और बढ़ती संख्या में आत्महत्या करने लगे हैं जबकि रासायनिक खेती के प्रवेश के पूर्व भारी सूखे और अकाल के समय भी किसान आत्महत्या के लिए बाध्य नहीं होते थे।

राष्ट्रीय अपराध लेखा ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार सन् 1997 से अब तक 2 लाख किसान आत्महत्या करने के लिए बाध्य हुए हैं। सन् 2008 में 16197 किसानों ने आत्महत्या की अर्थात् प्रत्येक 3 मिनट में 2 किसान आत्महत्या कर रहे हैं। आत्महत्याओं की ऊपर दी गई संख्या में महिलाओं की आत्महत्याओं के आंकड़े शामिल नहीं हैं जबकि उनमें से कई परिवार के आर्थिक संकट के चलते आत्महत्या करने को बाध्य होती हैं। आज़ादी के 60 वर्ष बाद तथा विकास की ऊंची दर के बावजूद किसानों द्वारा बढ़ती संख्या में आत्महत्या करना हमारी आर्थिक नीतियों, विशेषकर कृषि नीतियों में विसंगतियों की ओर संकेत करता है। वैश्वीकरण की नीति के कारण किसान कृषि उत्पादों की कीमतों में वैश्विक उतार-चढ़ावों के शिकार भी होने लगे हैं। सरकारें किसानों की आत्महत्याओं पर मुआवज़ा देकर मौन साध लेती है। इसके कारणों का विश्लेषण तक नहीं करती, उन्हें दूर करना तो दूर की बात है।

रासायनिक खेती ने किसानों को आर्थिक त्रासदी का शिकार तो बनाया ही, साथ ही अनेक प्रतिकूल पर्यावरणीय प्रभावों का शिकार भी बनाया है। रसायनिक खेती प्रारंभ में उत्पादकता में वृद्धि करती है, परन्तु बाद में उत्पादकता के उसी स्तर को बनाए रखने के लिए अधिकाधिक रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाइयां उपयोग करना पड़ती है। यह खाद और कीटनाशक दवाइयां बहकर नदी नालों व भूजल में पहुंचती है, उन्हें भी प्रदूषित करती है। इनके सतत उपयोग से भूमि अपनी उर्वरता खोती जा रही है। रासायनिक खेती के कारण फैल रहे ज़हर की तरफ विश्व का ध्यान सर्वप्रथम अस्सी के दशक में गया और खेती के गैर रासायनिक तरीकों के बारे में सोचा जाने लगा। खेती के इन तरीकों को जैविक खेती की संज्ञा दी जाती है। जलवायु पर रसायनिक खेती के प्रभावों ने भी गैर-रासायनिक खेती की दिशा में

सोचने को बाध्य किया। रासायनिक खाद आदि के तेल-उत्पाद होने कारण इनके उत्पादन की प्रक्रिया में कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन तो होता ही है, साथ ही नाइट्रस ऑक्साइड भी निकलती है। फिर कृषि के बढ़ते क्षेत्र के कारण वनों को भी नष्ट किया जाता है। अगर इस प्रक्रिया में खाद्य प्रसंस्करण की प्रक्रिया में उत्सर्जित कार्बन डाईऑक्साइड को भी जोड़ दें तो रासायनिक खेती का ग्रीन हाउस गैसों के कुल उत्सर्जन में योगदान एक-तिहाई के बराबर हो जाता है। इस तरह रासायनिक खेती जलवायु परिवर्तन का एक अहम कारण है। अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन ग्रैन ने 2009 की अपनी रिपोर्ट में रासायनिक खेती को ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन का सबसे बड़ा स्रोत माना है।

अगर रासायनिक खेती के स्थान पर जैविक खेती अपनाई जाए, तो रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों से तो मुक्ति मिलेगी ही, खाद्यान्न में वृद्धि तथा भूख और कुपोषण से मुक्ति भी संभव हो सकेगी। प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ. शटर के अनुसार जैविक खेती विश्व में भूख के शिकार लोगों को भूख से मुक्ति दिलाएगी। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के एक ताज़ा अध्ययन का निष्कर्ष है कि जैविक खेती के माध्यम से बिना किसी पर्यावरणीय और सामाजिक क्षति के खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि संभव होती है। इसमें अफ्रीकी राष्ट्रों के उन इलाकों का अध्ययन किया गया था जहां निजी और सार्वजनिक क्षेत्र में जैविक खेती की जा रही थी। 24 राष्ट्रों के 100 खेतों के पूरे वर्ष किए गए अध्ययन से पता चला कि जहां जैविक खेती अपनाई गई थी, वहां उत्पादन में औसतन 128 प्रतिशत वृद्धि हुई थी। अर्थात जैविक खेती ने रासायनिक खेती से भी बेहतर परिणाम दिए। साथ ही भूमि में नमी रहने से सूखे से लड़ने की क्षमता में भी वृद्धि हुई थी।

इन सब कारणों से पूरे विश्व में रासायनिक खेती के स्थान पर जैविक खेती को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। आम जनता द्वारा जैविक उत्पादों को बेहतर मानने से उनकी मांग भी बढ़ती जा रही है। 1990 में जहां जैविक उत्पादों का व्यापार एक अरब डॉलर के लगभग था, अब यह 9135 अरब डॉलर के बराबर हो गया है।

भारत में भी जैविक खेती के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है। केन्द्रीय कृषि और सहकारिता मंत्रालय के अनुसार सन 2005 में 77000 हैक्टर भूमि पर जैविक खेती से 120000 टन जैविक खाद्यान्न का उत्पादन हुआ था। अनुमान है कि जैविक खेती के अंतर्गत वर्तमान की 5.38 लाख हैक्टर भूमि बढ़कर सन 2012 तक 20 लाख हैक्टर हो जाएगी। विश्व में जैविक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ आर्गेनिक एग्रिकल्चरल मूवमेंट के नाम से एक संगठन बनाया गया है। जैविक खेती को प्रोत्साहन देने वाली 764 संस्थाएं इसकी सदस्य हैं।

अंततः हमें तकनीक, निवेश और बाज़ारवाद के चंगुल से मुक्त होना ही होगा। विश्व भर में कार्यरत बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उन प्रयासों को व्यर्थ करना होगा जो कृषि को एक उद्योग में बदलकर और रसायनों के बढ़ते चलन से भारी मुनाफा अर्जित करना चाहती हैं। सरकार को भी कृषि के तौर तरीकों में बदलाव के लिए बाध्य करना होगा। कुछ राष्ट्रों की सरकारों ने तो वैज्ञानिकों को जैविक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए आगे शोध करने को प्रेरित किया है। भारत में भी हरित क्रान्ति के प्रणेता डॉ. स्वामीनाथन अब जैविक खेती के पक्ष में प्रयास करने लगे हैं। निजी कंपनियां तो जैविक खेती के लिए शोध कार्य करने से रही क्योंकि इसमें वे पेटेंट आदि लेकर या रसायनों का उत्पादन कर अपना खजाना नहीं भर सकती हैं। परन्तु अगर बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्यान्न की पूर्ति निश्चित करना चाहते हैं तो हमें डॉ. शटर की इस चेतावनी को याद रखना होगा कि अगर हम विश्व के अरबों कुपोषित लोगों को भरपेट अन्न देना चाहते हैं तो हमें पूरे विश्व की खाद्य प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने होंगे, उसे जैविक खेती पर आधारित करना होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***